वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 494

महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र विधान

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मुम्बई चातुर्मास के मध्य 84वें जन्मजयंती महोत्सव के अवसर पर मुम्बई (महा.) में 5 से 8 अक्टूबर 2017 तक आयोजित शरदपूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.,

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

- Website -

www.jambudweep.org   www.encyclopediaofjainism.com

E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2543	मूल्य
1100 प्रतियाँ	5 अक्टूबर 2017, शरदपूर्णिमा	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

मंगल आशीर्वाद

मुझे गौरव है कि "महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र विधान" की रचना से अब देश-विदेश के भक्तजन तीर्थों की परोक्ष वंदना का अनुपम अवसर प्राप्त करेंगे। यह विधान मेरी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी की गहन पद्यरुचि तथा धर्मभावनाओं का प्रतिफल है, जिसके कारण सरल भाषा के साथ भावपूर्ण तरीके से भक्तजन महाराष्ट्र के सभी तीर्थों की वंदना एक साथ कर सकेंगे। साथ में सभी को परोक्ष में ही समस्त तीर्थों के अर्घ्य समर्पण का भी पुण्य प्राप्त होगा।

अतः इस विधान के प्रकाशन अवसर पर महाराष्ट्र के सभी सिद्धक्षेत्रों, अतिशयक्षेत्रों, प्राचीन तीर्थों एवं नवोदित तीर्थों की वंदना करते हुए विधान की रचयित्री आर्यिका चंदनामती जी के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है तथा इस विधान को करने-कराने वाले भी सदैव धर्मवृद्धि के साथ पुण्यार्जन करते रहें, ऐसी मंगल भावना है।

-गणिनी ज्ञानमती

सम्पादकीय

-स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

Our Sacred books are our light houses erected in the great sea of time.

अर्थात् सद्पुस्तकें वह प्रकाशगृह हैं, जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गई हैं।

आत्मोन्नति के मार्ग में सुसाहित्य का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। साधक पुरुष के लिए साधना मार्ग में साध्य की ओर बढ़ने के लिए सत्साहित्य एक प्रकृष्ट आलम्बन है। सद्गुरु सर्वत्र उपलब्ध नहीं होते परन्तु सत्साहित्य प्रत्येक मंदिर, साहित्य सदन एवं स्वाध्याय भवन में उपलब्ध हो जाता है और उस सत्साहित्य का उपयोग तभी होता है, जब साधक उसका अध्ययन करके उनमें अपना प्रतिबिम्ब देखता है।

आचार्य कुन्दकुन्द जैसे दिग्गज आचार्यों ने भी सत्साहित्य की रचना एवं उनके स्वाध्याय में ही अपना सम्पूर्ण जीवन बिताया, ऐसे आचार्यों का नाम आज भी अमर है। साहित्य लेखन की उसी शृंखला में 400 ग्रंथों की रचनाकर्त्री परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम आज देश में ही नहीं विदेशों तक भी फैला हुआ है, जिनकी लेखनी में आगम का प्रतिरूप दर्पणवत झलकता है। पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य को सतत प्रकाशित करने के लिए पूज्य माताजी की दिव्य प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की भी स्थापना की गई, तब से लगातार इस ग्रंथमाला द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है।

इस ग्रंथमाला से जहाँ पूज्य माताजी द्वारा टीकाकृत षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्तग्रंथों का, नियमसार, समयसार, अष्टसहस्री, कातंत्र व्याकरण आदि मूल आगम ग्रंथों का प्रकाशन होता है वहीं मुख्यतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित विभिन्न मण्डल विधान आदि कृतियों का प्रकाशन भी समाज के लिए विशेष मांग हेतु बना रहता है। इस हेतु हम इस ग्रंथमाला को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं। ग्रंथ प्रकाशन की उसी शृंखला में इस नूतन कृति का प्रकाशन हो रहा है। अन्य प्रकाशित ग्रंथों की भांति पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित यह अनूठी कृति भी आप सभी के लिए जैनधर्म व भक्तिमार्ग की प्रभावना में माध्यम बने, यही इस कृति के प्रकाशन की सार्थकता है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

"तीर्यते संसार येन असौ तीर्थः" जिससे संसार समुद्र तिरा जाए, उसे तीर्थ कहते हैं। भव समुद्र से पार लगाने वाले उन तीर्थों में शाश्वत तीर्थ दो हैं–अयोध्या एवं सम्मेदशिखर।

त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकर जिस पवित्र धरा पर जन्म लेते हैं, लेते रहे हैं और लेंगे वह शाश्वत तीर्थ अयोध्या है और जहाँ से निर्वाण प्राप्त करते हैं, करते रहे हैं और करेंगे, वह शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर है। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश मात्र 5 तीर्थंकर ही अयोध्या नगरी में जन्में और शेष 19 तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्में, जिससे तीर्थंकर जन्मभूमियाँ 16 हो गईं तथा 20 तीर्थंकर सम्मेदशिखर से व चार अन्य स्थानों से मोक्ष गये, अतः 5 निर्वाणभूमियाँ हो गईं, ये सभी तीर्थ संज्ञा को प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त जहाँ तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक हुए अथवा जहाँ से अन्य विशेष महापुरुष सिद्ध हुए या जहाँ पर तीर्थंकर प्रतिमाओं का कोई विशेष चमत्कार हुआ वे सभी तीर्थ संज्ञा से सुशोभित हैं जिसका कण-कण पूज्य होने से उसकी रज मस्तक पर लगाना परम पवित्र माना जाता है।

विश्व में भारत देश की पावन वसुन्धरा को ऐसे पवित्र तीर्थों की जननी होने का गौरव प्राप्त है, जो वर्तमान में हजारों की संख्या में भिन्न-भिन्न प्रान्तों में हैं, उन्हीं में महाराष्ट्र प्रान्त में लगभग चौवालिस तीर्थ हैं, जिनका शिरमौर्य परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से 99 करोड़ महामुनियों की सिद्धभूमि मांगीतुंगी जी में पर्वत पर निर्मित ऋषभगिरि तीर्थ बन गया है जहाँ गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड, लंदन में दर्ज विश्व की एकमात्र भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा जैनत्व की अमरता का संदेश प्रदान कर रही है।

महाराष्ट्र के इन परम पावन तीर्थों की वंदना हमें एक ही स्थान पर बैठे-बैठे अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक करने का श्रेय प्रदान किया है जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी अद्वितीय गुरु की अद्वितीय शिष्या परम पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकारत्न श्री चंदनामती माताजी ने, जिनकी लेखनी अपनी गुरुमाता के समान चलती ही नहीं अपितु बोलती है, जिनका जीवन स्वयं में आदर्श है, जिनका हर क्षण, हर पल गुरु चरणों में

समर्पित है। अपने 60 वर्षीय जीवनकाल में 49 वर्षीय संयमी जीवन और 29 वर्षीय दीक्षित जीवन के कठोर साधनाकाल में भी ख्याति, लाभ, पूजा से दूर, पूज्य माताजी की प्रतिछाया बनकर सदैव अर्जुन, चन्द्रगुप्त और एकलव्य सा उदाहरण प्रस्तुत करने वाली वात्सल्य एवं करुणा-दया की सागर पूज्य आर्यिकारत्न श्री चंदनामती माताजी वर्तमान में जैनशासन का वह दिव्य, अनमोल रत्न हैं, जिनके जीवन का प्रत्येक पहलू अनुकरणीय, वंदनीय, ग्रहणीय, प्रशंसनीय एवं धारणीय हैं।

उनके द्वारा लिखित अब तक की 200 कृतियों में हर कृति में आगम का सार तिल में तेल और दूध में दही के समान विद्यमान है, जिसे पढ़-सुनकर, मनन और हृदयंगम कर भव्य प्राणी पुण्यवर्धन के साथ विशेष कर्मनिर्जरा तो करता ही है, साथ ही पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित इस युग में भी धर्म के मर्म को अत्यन्त सरलतापूर्वक समझकर देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्तिमान हो उठता है, यह उनके लेखन की विशेषता है।

मात्र हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत ही नहीं अपितु अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं की भी वे बेजोड़ और सिद्धहस्त लेखिका हैं, सभा में बैठे-बैठे ही अत्यन्त सुन्दर, समयोचित और आगमोक्त रचना करने में आप विशेष निपुण हैं। लेखन के उसी क्रम में मात्र 4-5 दिन के अन्तराल में पूज्य माताजी के द्वारा लिखी गई यह नूतन कृति "महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र विधान" है, जिसे करके महाराष्ट्र के तीर्थों की यात्रा का पुण्य सहज ही प्राप्त हो जाता है। विधान के साथ ही इसमें महाराष्ट्र तीर्थ की अंग्रेजी पूजा एवं महाराष्ट्र तीर्थ यात्रा का काव्य कथानक भी है। गागर में सागर के समान ऐसी अमूल्य कृतियों की प्रदात्री, षट्खण्डागम सिद्धान्तग्रंथ की हिन्दी टीकाकर्त्री ऐसी परम विदुषी मातुश्री सदैव जयवन्त रहकर इस धरा को ऐसे ही अनमोल रत्नपिटारे प्रदान करती रहें और भव्यात्माजन उन कृतियों का अच्छी प्रकार आलोढन कर अपने मानव जीवन में उसे उतारकर आत्मतत्त्व को प्राप्त करें, यही पवित्र भावना है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका रत्न श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत – 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से "शास्त्री" की उपाधि, 1973 में "विद्यावाचस्पति" की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

मर्यादा शिष्योत्तमा की उपाधि – 25वीं रजतजयंती (पूज्य चंदनामती माताजी की) सन् 2014 के अवसर पर जन्मभूमि टिकैतनगर जैन समाज द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि–तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान–चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि 200 से अधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि), भजन (लगभग 1500), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।

महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र विधान

रचयित्री - आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - आओ बच्चों ! तुम्हें दिखाएँ .....

अपने पूर्वज ऋषि-मुनियों से, हमने सुनी कहानी है।
भारत की पावन धरती, तीर्थों की पुण्य निशानी है।।
जय-जय तीर्थ जिनम्-2, जय-जय तीर्थ जिनम्-2।।टेक.।।

मेरे भारत राष्ट्र में इक महाराष्ट्र प्रदेश सुहाना है।
उस महाराष्ट्र प्रान्त में तीर्थों का सुन्दर नजराना है।।
उन सब तीर्थों की यात्रा, करने की प्रथा पुरानी है।
भारत की पावन धरती, तीर्थों की पुण्य निशानी है।।
जय-जय तीर्थ जिनम्-2, जय-जय तीर्थ जिनम्-2।।1।।

महाराष्ट्र के सब तीर्थों का, एक साथ आह्वान करूँ।
स्थापन सन्निधिकरण कर, निज आतम उत्थान करूँ।।
पुनः अष्ट द्रव्यों के द्वारा, पूजन प्रथा पुरानी है।
भारत की पावन धरती, तीर्थों की पुण्य निशानी है।।
जय-जय तीर्थ जिनम्-2, जय-जय तीर्थ जिनम्-2।।2।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य सिद्धक्षेत्र-अतिशयक्षेत्रादिसमस्ततीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य सिद्धक्षेत्र-अतिशयक्षेत्रादिसमस्ततीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य सिद्धक्षेत्र-अतिशयक्षेत्रादिसमस्ततीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

- अथ अष्टक -

तर्ज -चाँद मेरे आजा रे ....

चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2,
महाराष्ट्र के पावन तीर्थों की यात्रा कर लो।। चलो..।।टेक0।।
क्षीरोदधि सागर जल की, इस जल में कल्पना कर लो।
तीर्थों की पूजन करके, संसार भ्रमण को हर लो।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।1।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिस कर, उसमें कर्पूर मिलाया।
भव आतप हरने हेतू, तीरथ पूजन में चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।2।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षत लेकर, भावों को शुद्ध बनाया।
अक्षय पद पाने हेतू, तीरथ पूजन में चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।3।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थों के सुरभित उपवन से, चुन चुन कर पुष्प मँगाया।
विषयाशा तजने हेतू, तीरथ पूजन में चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।4।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे-मीठे पकवानों को भर-भर थाल सजाया।
क्षुध रोग विनाशन हेतू, तीरथ पूजन में चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।5।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीरथ की मंगल आरति करने को दीप जलाया।
मोहान्धकार नश जावे, दीपक पूजन में चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।6।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि धूप जलाने हेतू, अग्नि को जलाया।
निज अष्ट कर्म नाशन को, पूजन में धूप जलाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।7।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम्र बादामों के फल से थाल सजाया।
शिव फल के पाने हेतू, फल को पूजन में चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।8।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों द्रव्यों से, शुभ अर्घ्य का थाल सजाया।
'चन्दनामती' तीर्थों की पूजन में अर्घ्य चढ़ाया।।
चलो तीरथ यात्रा कर लो - 2 ।।9।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा -

स्वर्ण कलश में नीर ले, कर लूँ शांतीधार।
इस भवदधि के तीर से, हो जाऊँ अब पार।।10।।

शान्तये शान्तिधारा।

पुष्पों के उद्यान से, चुन चुन पुष्प मंगाय।
पुष्पांजलि कर तीर्थ पर-आत्म तीर्थ बन जाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

-मंडल पर पुष्पांजलि चढ़ाना है-

तर्ज- इक प्यार का नगमा है.....

महाराष्ट्र के तीर्थों को, मुझे अर्घ्य चढ़ाना है।
मन से सब तीर्थों के, वंदन करके आना है।।टेक0।।
ये तीर्थ ही आत्मा को, सच्चा तीर्थ बनाते हैं।
ये ही जिनशासन की, सच्ची कीर्ति बढ़ाते हैं।।
सच्चे मन से करूँ अर्चन, पुष्पांजली चढ़ाना है।
मन से सब तीर्थों के, वंदन करके आना है।।1।।महाराष्ट्र के...

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रतीर्थक्षेत्रमण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-अर्घावली-

तर्ज - माई रे माई.....

महाराष्ट्र में सर्वोपरि, मांगीतुंगी तीरथ है।
निन्यानवे कोटि मुनि की, निर्वाणभूमि कीरत है।।
जय हो सिद्धक्षेत्र की जय, जय हो सिद्धक्षेत्र की जय।।टेक0।।

माँगी एवं तुंगीगिरि पर, जिनवर प्रतिमाएँ हैं।
पिच्छि-कमण्डलु-मालायुत मुनियों की प्रतिमाएँ हैं।।
नीचे भी जिनमंदिर में अतिशयकारी मूर्ति हैं।
निन्यानवे कोटि मुनि की, निर्वाणभूमि कीरत है।
जय हो सिद्धक्षेत्र की जय, जय हो सिद्धक्षेत्र की जय।।1।।

महाराष्ट्र का लघु सम्मेदशिखर यह कहलाता है।
पैंतालिस सौ फिट ऊँचा पर्वत माना जाता है।।
जय जयकारा कर यात्री चढ़ते इस पर्वत पर हैं।
निन्यानवे कोटि मुनि की, निर्वाणभूमि कीरत है।
जय हो सिद्धक्षेत्र की जय, जय हो सिद्धक्षेत्र की जय।।2।।

यहाँ ऋषभगिरि पर इक सौ अठ फिट जिनवर प्रतिमा है।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी की यह महिमा है।।
चलो चढ़ाएँ महा अर्घ्य यह बना महा तीरथ है।
ऋषभगिरि के ऋषभदेव तीर्थाधिनाथ तीरथ हैं।।
जय हो ऋषभदेव की जय, जय हो ऋषभगिरि की जय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

-शंभु छंद-

श्री सिद्धक्षेत्र गजपंथा से बलभद्र मुनीगण मोक्ष गये।
एवं असंख्य मुनिराज यहाँ से कर्म नाश कर मोक्ष गये।।
पर्वत व तलहटी के जिनमंदिर सिद्धक्षेत्र की गरिमा हैं।
इक महा अर्घ्य अर्पण कर लो, गजपंथगिरी की महिमा है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गजपंथगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुनिराज देशभूषण-कुलभूषण सिद्धभूमि कुंथलगिरि है।
चारित्रचक्रि आचार्य शांतिसागर का समाधिस्थल है।।
इनकी ही प्रेरणा से शिवगामी मुनिद्वय की प्रतिमाएँ बनीं।
पर्वत व तलहटी के जिनमंदिर में भी प्रतिमाएँ हैं घनी।।1।।

-दोहा-

अट्ठारह फिट के खड़े, बाहुबली भगवान।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं नमूँ, सब जिनबिंब महान।।2।।

ॐ ह्रीं कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अंतिम श्रुतकेवलि श्रीधर की निर्वाणभूमि कुण्डलगिरि है।
श्री पार्श्वनाथ कलिकुण्ड मूर्ति पर्वत पर यहाँ अवस्थित है।।
पूना-सातारा-मिरजमार्ग सांगली निकट यह तीरथ है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, वृद्धिंगत होवे कीरत है।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि कलिकुण्ड पार्श्वनाथसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

बोरीवली-मुम्बई नगरी में पोदनपुर तीरथ उत्तम है।
जहँ ऋषभदेव-भरतेश-बाहुबली की प्रतिमा सर्वोत्तम हैं।।

आचार्य नेमिसागर मुनि ने गुरु की स्मृति में बनवाया।
आचार्य शांतिसागर स्मारक नाम से इसको चमकाया।।1।।

-दोहा-

अर्घ्य चढ़ा कर तीर्थ को, नमन करूँ शत बार।
जिनवर गुरुवर कीर्ति को, स्मरण करे संसार।।2।।

ॐ ह्रीं पोदनपुर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

-शेर छन्द-

कचनेर अतिशय क्षेत्र में, अतिशय बड़ा भारी।
श्री पार्श्वनाथ मूर्ति स्वयं, जुड़ गई प्यारी।।
सबके मनोवांछित फलों को पूर्ण है करती।
मैं अर्घ्य चढ़ा कर लहूँ श्रुतज्ञान की मती।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कचनेर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

तर्ज - फूलों सा चेहरा तेरा.....

मुनिसुव्रत जिनराज हैं, शनिग्रह के नाशक प्रभो !।
इनका बड़ा नाम है, पैठण में धाम है, अतिशय के धारक प्रभो !।।टेक0।।
कहते हैं यह बालू की है प्रतिमा, इसका अलग अपना इतिहास है।
शनिवार मावस को भक्तजन, महा अभिषेक कर करते अहसास हैं।।
हुई ग्रह की शान्ति, मिट गई अशान्ति, मेरे ये आराध्य सच्चे प्रभो !।
अष्ट द्रव्यों का महा अर्घ्य ले, चरणों चढ़ाऊँ प्रभो !।
इनका बड़ा नाम है, पैठण में धाम है, अतिशय के धारक प्रभो !।।1।।

ॐ ह्रीं पैठणअतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

तर्ज- रोम-रोम से निकले ....

जनम-जनम में पाऊँ जिनवर दर्श तुम्हारा .. हाँ दर्श तुम्हारा।
तीर्थों की भक्ती करके, पाऊँ भवदधि का किनारा।।जनम...।।टेक0।।
महाराष्ट्र में जटवाड़ा-जिन्तूर-नेमगिरि प्यारे हैं।
एलोरा की गुफाओं में, इतिहास ही भरे हमारे हैं।।
कवलाना शान्तिवन के, दर्शन से मिले सुख प्यारा।
जनम-जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।1।।

जिनमंदिर के साथ प्राकृतिक भी सौन्दर्य निहारो।
अर्घ्य चढ़ाकर इन तीर्थों को, निज सौन्दर्य निहारो।।
तभी 'चन्दनामती' मिलेगा, आतम तीरथ प्यारा।
जनम-जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।2।।

ॐ ह्रीं जटवाड़ा अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
ॐ ह्रीं जिंतूर अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
ॐ ह्रीं कवलाना शांतिवन अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं एलोरा अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

शिरडी में प्रभु पार्श्वनाथ का ज्ञानतीर्थ इक सुन्दर है।
सम्यग्दर्शन प्राप्त कराने वाला कमल का मंदिर है।।
गणिनी ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा का प्रतिफल है।
अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ तीर्थ को मिले पार्श्व प्रभु से फल है।।1।।

ॐ ह्रीं शिरडी ज्ञानतीर्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

तर्ज-जिन्दगी इक सफर........

चैतन्यवन तीर्थ है सुहाना, जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाना।
जय हो जय हो जय हो, जय हो जय हो जय,
जय हो जय हो जय.....।।चैतन्य वन.।।टेक.।।

यहाँ चौबिस जिनवरों के केवलज्ञान वृक्ष।
उनके नीचे शोभ रहे प्रभुवर के चरण।।
ध्यानकेन्द्र नक्षत्र वन सुहाना।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाना।।
जय हो जय हो जय.....।।चैतन्य वन.।।1।।

प्रभु बाहुबली जी की मूर्ति है सुन्दर।
समवसरण उपवन आदिनाथ मंदिर।।
कैलाशगिरि दृश्य भी सुहाना।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाना।।
जय हो जय हो जय.....।।चैतन्य वन.।।2।।

ॐ ह्रीं चैतन्यवन तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पास में ही अतिशय क्षेत्र मांडल है।
वहाँ मूलनायक प्रभु चन्द्रप्रभ हैं।।
क्षेत्रपाल जी का अतिशय है पुराना।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाना।।

जय हो जय हो जय.....।।

ॐ ह्रीं मांडल अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

अंजनगिरि भी एक तीर्थक्षेत्र है।
नासिक निकट गोदावरी नदी तट पर है।।
गिरिवर पे शांतिनाथ दर्शन पाना।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाना।।

जय हो जय हो जय.....।।

ॐ ह्रीं अंजनगिरि अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

तर्ज-जरा सामने तो आओ...........

तीरथ यात्रा का पुण्य विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इनके दर्शन से बनो परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।टेक.।।
महाराष्ट्र सातारा जिले में नांदगिरी भी तीरथ है।
वहाँ गुफा में सरोवर तट पर पार्श्वनाथ की मूरत है।।
फलटण नगरी ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ धवलग्रंथ विराजमान हैं।
इनके दर्शन से बनो परमातमा भवसागर से होकर पार है।।1।।

ॐ ह्रीं नांदगिरि अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।
ॐ ह्रीं फलटण अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

दही गांव की बीस तीर्थंकर, प्रतिमा अति प्राचीन बनीं।
बाहुबली प्रतिमा एवं रत्नत्रय चतुर्दिक मूर्ति बनीं।।
पंढरपुर की भी कृतियाँ विशाल हैं, दर्शन से होवे मन खुशहाल है।
इनके दर्शन से बनो परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।2।।

ॐ ह्रीं दहीगांव अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं पंढरपुर अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

जाएंगे जाएंगे जाएंगे, तीरथयात्रा को जाएंगे।
गाएंगे गाएंगे गाएंगे, तीर्थों के गुण हम गाएंगे।।टेक.।।

महाराष्ट्र में है कुम्भोज तीर्थ जहाँ बाहुबली जी विराजे हैं।
गुरु शांतिसिंधु व समन्तभद्र के गीत वहाँ गाये जाते हैं।।
पाएंगे पाएंगे पाएंगे, वहाँ ज्ञान के रजकण पाएंगे।
जाएंगे जाएंगे जाएंगे, तीरथयात्रा को जाएंगे।।1।।

हम महा अर्घ्य ले थाली में, वहाँ के बिम्बों को चढ़ाएंगे।
सम्मेदशिखर गिरनार व अष्टापद आदि को ध्याएंगे।।
पाएंगे पाएंगे पाएंगे, समवसरण के दर्शन भी पाएंगे।
जाएंगे जाएंगे जाएंगे, तीरथयात्रा को जाएंगे।।2।।

ॐ ह्रीं कुम्भोज बाहुबली तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

-शंभु छंद-

सोलापुर-कोल्हापुर-आष्टा अरु तेर तीर्थ को नमन करूँ।
महाराष्ट्र प्रान्त के तीर्थों की चंदन सम माटी सिर पे धरूँ।।
कोल्हापुर के मठ में नौ मीटर आदिनाथ की प्रतिमा है।
इन तीर्थों के प्रति महा अर्घ्य अर्पूं गाऊँ प्रभु महिमा है।।1।।

ॐ ह्रीं सोलापुर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं कोल्हापुर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं आष्टा तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।
ॐ ह्रीं तेर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

तर्ज-जैनधर्म के हीरे-मोती..........

जिनशासन के तीर्थों की, मैं गाथा गाऊँ गली-गली।
निज आत्मा को तीर्थ बनाऊँ, भावना भाऊँ भली-भली।।टेक.।।

महाराष्ट्र में इक सबसे प्राचीन नांदणी तीरथ है।
अति प्राचीन वहाँ मठ है वह शक्तिपीठ अतिशययुत है।।
इकतीस फुट के आदिनाथ के, निकट ज्योति इक जली-जली।
निज आत्मा को तीर्थ बनाऊँ, भावना भाऊँ भली-भली।।1।।

ॐ ह्रीं नांदणी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

धर्मनगर आचार्य बाहुबलि की प्रेरणा से तीर्थ बना।
श्री आचार्य कुंथुसागर से कुंथुगिरी है तीर्थ बना।।
आगम मंदिर-गुरु मंदिर आदी रचना जहाँ भली भली।
जिनशासन के तीर्थों की मैं गाथा गाऊँ गली-गली।।2।।

ॐ ह्रीं धर्मनगर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।
ॐ ह्रीं कुंथुगिरि तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

शिरड शाहपुर और नवागढ़ अतिशय क्षेत्र कहाते हैं।
महाराष्ट्र के तीर्थों में यात्री दर्शन को जाते हैं।।
शिरपुर के अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु जी का अपना अतिशय है।
इन सब तीर्थों को अर्घ्य चढ़ा मैं पा जाऊँ सुख अक्षय है।।1।।

ॐ ह्रीं शिरड शाहपुर अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।
ॐ ह्रीं नवागढ़ अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।
ॐ ह्रीं शिरपुर अंतरिक्ष पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

कारंजा अतिशय क्षेत्र के जिनमंदिरों को मन से नमन करूँ।
ब्रह्मचर्याश्रम व श्राविकाश्रम के महावीर जिनालय को प्रणमूँ।।
यहाँ हस्तलिखित हैं ताड़पत्र के कई ग्रंथ भंडारों में।
श्री देव शास्त्र गुरु सहित तीर्थ को अर्घ्य समर्पूं आऊँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं कारंजा अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

अमरावति भातकुली मुक्तागिरि रामटेक को वन्दन है।
महाराष्ट्र की जो उपरजधानी वह नागपुर भी तीरथ सम है।।
वैतुल-अचलपुर-बारामति व परतवाड़ा भी तीरथ हैं।
इन सबको अर्घ्य चढ़ाकर इनका परिचय जानो सुखप्रद है।।1।।

ॐ ह्रीं अमरावती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।
ॐ ह्रीं भातकुली तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।
ॐ ह्रीं मुक्तागिरि तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।
ॐ ह्रीं रामटेक तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं नागपुर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।
ॐ ह्रीं वैतुल तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।
ॐ ह्रीं अचलपुर तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।
ॐ ह्रीं बारामती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।
ॐ ह्रीं परतवाड़ा अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

-दोहा-

नूतन तीर्थों में बना, णमोकार शुभ तीर्थ।
देवनंदि आचार्य की, है यह कृती विशिष्ट।।1।।
अर्घ्य चढ़ा इस तीर्थ को, नमूं मंत्र णमोकार।
णमोकार का मंत्र जो, करता भव से पार।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीणमोकारतीथक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

धर्मतीर्थ इक है बना, उसे चढ़ाऊँ अर्घ्य।
गुप्तिनन्दि आचार्य हैं, संप्रेरक चैतन्य।।1।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

श्री आचार्य वीरसागर की जन्मभूमि है प्यारी।
वीरगांव की धरती तीरथ बनी है सचमुच प्यारी।।
जय हो वीरगांव की जय, जय हो वीर सिन्धु की जय।।टेक.।।
श्री आचार्य वीरसागर के शिष्य प्रथम कहलाए।
पट्टाचार्य प्रथम व ज्ञानमति माँ के गुरु कहलाए।।
उनकी जन्मभूमि की पूजा-भक्ति है सुखकारी।
वीरगांव की धरती तीरथ बनी है सचमुच प्यारी।।
जय हो वीरगांव की जय, जय हो वीर सिन्धु की जय।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री वीरसागर जन्मभूमि वीरगांव तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

वालुज अतिशय क्षेत्र में, चन्द्रप्रभ भगवान।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ सम्यग्ज्ञान।।1।।

ॐ ह्रीं वालुज अतिशयक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

-पूर्णार्घ्य-

तर्ज-मैं तो छोड़ चली बाबुल का देश.....

चलो सब मिल चढ़ाएं पूर्णार्घ्य, महाराष्ट्र के तीर्थों को.......चलो
करो वन्दन नमाकर माथ, महाराष्ट्र के तीर्थों को।।चलो.....।।टेक.।।
सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्र प्यारे।
तीर्थों की वन्दना से कटें पाप सारे।।
अर्घ्य भर भर चढ़ाएं स्वर्ण थाल, महाराष्ट्र के तीर्थों को।।चलो......।।1।।
भारत देश मेरा राष्ट्र कहलाता।
उसमें प्रदेश महाराष्ट्र है आता।
''चन्दनामति'' करें सब प्रणाम, महाराष्ट्र के तीर्थों को।।चलो....।।2।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रान्तस्य समस्तसिद्धक्षेत्र-अतिशयक्षेत्र-तीर्थक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

तर्ज-दीवाना गुरुवर का............

पढ़ो अब जयमाला-2,
तीर्थों की गुणमाला। पढ़ो अब.......
महाराष्ट्र के तीर्थों का दर्शन कर आनन्द झाला,
पढ़ो सब जयमाला-2।।टेक.।।

महाराष्ट्र का सबसे बड़ा तीरथ है मांगीतुंगी।
जहाँ बनी है ऋषभदेव की प्रतिमा सबसे ऊँची।।
इक सौ आठ फुट के जिनवर का देखो रूप निराला,
पढ़ो अब जयमाला-2
तीर्थों की गुणमाला, पढ़ो सब जयमाला-2।।1।।

सिद्धक्षेत्र का दर्शन क्रम से आतमसिद्धि कराता।
भौतिक एवं सांसारिक सुख का भी वही प्रदाता।।

इसीलिए निर्वाण सिद्धक्षेत्रों का दर्श निराला,
पढ़ो अब जयमाला, तीर्थों की गुणमाला, पढ़ो....।।2।।

अतिशयक्षेत्रों का वन्दन है चमत्कार दिखलाता।
वहाँ विराजे जिनबिम्बों से पूर्ण करो सब आशा।।
आत्मा को भगवान बनाने का अतिशय वहाँ पाना,
पढ़ो अब जयमाला, तीर्थों की गुणमाला, पढ़ो....।।3।।

तीर्थों का मतलब है भवसागर से सबको तिराना।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति नाव में बैठ नदी तिर जाना।।
चेतन और अचेतन तीर्थों का दर्शन कर जाना,
पढ़ो अब जयमाला, तीर्थों की गुणमाला, पढ़ो....।।4।।

जल से फल तक अष्ट द्रव्य ले मैंने अर्घ्य बनाया।
जयमाला के माध्यम से तीरथ पूजन में चढ़ाया।।
तभी ''चन्दनामती'' तीर्थ पूजन का फल मिले प्यारा,
पढ़ो अब जयमाला, तीर्थों की गुणमाला, पढ़ो....।।5।।

ॐ ह्रीं महाराष्ट्रप्रदेशस्य समस्ततीर्थक्षेत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-शेर छंद-

महाराष्ट्र प्रान्त के सभी तीर्थों की वंदना।
भवदधि से तिराती है प्रभू भक्ति वन्दना।।
तीर्थों की यात्रा करके भवभ्रमण को मिटाऊँ।
फिर ''चन्दनामती'' न मैं संसार में आऊँ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

प्रशस्ति

-शंभु छंद-

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के पावन श्रीचरणों में नमन।
शासननायक महावीर तक चौबीसों जिनवर को नमन।।
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में ऋषभगिरि पर्वत को नमन।
वहाँ विराजे एक शतक अठ फुट वृषभेश्वर को वन्दन।।1।।

सदी बीसवीं के श्री प्रथमाचार्य शान्तिसागर को नमन।
वीरसिन्धु-शिव-धर्म-अजित-श्रेयांस व अभिनंदन को नमन।।
सप्तम पट्टाचार्य सूरि श्री अनेकान्तसागर को नमन।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी के पद में कोटि नमन।।2।।

इन गणिनी माता की शिष्या नाम चन्दनामति मेरा।
दीक्षा देकर माताश्री ने पावन जनम किया मेरा।।
ज्ञानामृत को पिला मुझे वैराग्य से ओतप्रोत किया।
इसीलिए कुछ मिली योग्यता गुरुपद से मन जोड़ लिया।।3।।

माघ शुक्ल पूर्णिमा वीर संवत् पच्चिस सौ तेंतालिस।
दो हजार सत्रह इसवी सन् दश फरवरी दिनाँक शुभ दिन।।
महातीर्थ श्री ऋषभगिरि पर्वत मांगीतुंगी ऊपर।
निज गुरु माँ के चरण बैठ इस काव्यकृति का किया सृजन।।4।।

मेरी कायिक जननी मोहिनी माँ रत्नमती आर्यिका बनीं।
वे भी मुझको आशिष देवें श्रुतज्ञान की मम मति रहे बनी।।
महाराष्ट्र तीर्थ का यह विधान जग में मंगलकारी होवे।
महाराष्ट्र प्रान्त के तीर्थों की भक्ति में सहकारी होवे।।5।।

आरती

तर्ज-लेके पहला पहला प्यार.....

जय जय महाराष्ट्र के तीर्थ, जय तीर्थों की पावन कीर्ति,
मंगल आरति कर तीरथ की रज को नमाऊँ शीश।।
जय जय..।।टेक.।।

भारत हमारा पूरे विश्व का जिनालय है।
यहीं चूँकि जिनवर-मुनिवर-तीर्थ का महालय है।।
सबसे बड़ा है आतम तीर्थ, गाई सबने उसकी कीर्ति,
मंगल आरति कर तीरथ की रज को नमाऊँ शीश।।
जय जय...।।1।।

महाराष्ट्र की धरती पर तीरथ अनेक हैं।
मांगीतुंगी उनमें सबका सिरमौर एक है।।
वहाँ है ऋषभगिरि महातीर्थ, विश्व में फैली जिसकी कीर्ति,
मंगल आरति कर तीरथ की रज को नमाऊँ शीश।।
जय जय...।।2।।

कचनेर-पैठण एवं गजपंथा तीर्थ है।
महाराष्ट्र में लगभग तीर्थ चवालिस हैं।।
ये हैं अतिशय पावन तीर्थ, इनकी गाते हैं सब कीर्ति,
मंगल आरति कर तीरथ की रज को नमाऊँ शीश।।
जय जय...।।3।।

भावों से सब तीर्थों की यात्रा करूँ मैं।
''चन्दनामती'' अब भव की यात्रा हरूँ मैं।।
हे प्रभु! मैं भी बनूँ इक तीर्थ, गाऊँ तीर्थों की ही कीर्ति,
मंगल आरति कर तीरथ की रज को नमाऊँ शीश।।
जय जय...।।4।।

Maharashtra Teerth Poojan-English

Written by- Aryika Chandnamati

Tune-Mere Desh Ki Dharti.......

Earth of our Nation has given us , many pious Teerthas.

Earth of our Nation........2.

Our Nation is called Bhaarat on the name of King Samrat Bharat.

....name of King Samrat Bharat.

Maharashtra State is situated there in our holy Nation.

.......there in our holy Nation.

Ho ho ho....o....o....

There is highest Idol of Lord Shri Rishabhdev Teerthankar.

Earth our Nation.......(1.)

Many holy Pilgrimages are in Maharashtra State today.

.....in Maharashtra State today.

We have come for worshipping Prabho ! taking many fragrant flowers.

........taking many fragrant flowers.

Ho ho ho....o....o....

We do Ahwanan-Sthapan-Sannidhikaran in worship,

Earth our Nation.......(2.)

Om hreem Maharashtra Teerth Samooh ! Atra Avatar Avatar Samvaushat Ahwananam.

Om hreem Maharashtra Teerth Samooh ! Atra tishth tishth thah thah Sthapanam.

Om hreem Maharashtra Teerth Samooh ! Atra mam Sannihito Bhav Bhav Vashat Sannidhikaranam.

-Ashtak-

Tune - Dekh tere Sansar Ki halat....

Many holy Pilgrimages are in state Maharashtra ,

We worship all Pilgrimages-2.

We bring pure water of Ganga.

Doing Jaldhara for Teerthas.

We worship by holy water ending birth and death ,

We worship all Pilgrimages-2.....(1.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Jane-Jara-Mrityu Vinashanaya Jalam Nirvapameeti Swaha.

We bring pure Sandal of Kashmir.

Offering in feet of all Teerthas.

We worship by holy Sandal ending soul heatness ,

We worship all Pilgrimages-2.....(2.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Sansartaap Vinashanaya Chandanam Nirvapameeti Swaha.

We bring pure Akshat in both hands.

Offering in feet of all Teerthas.

We worship by holy Akshat to get endless post

,

We worship all Pilgrimages-2.....(3.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Akshaya pad Praptaye Akshatam Nirvapameeti Swaha.

We bring many beautiful Flowers.

Showering in feet of all Teerthas.

We worship by fragrant flowers ending sensual pleasures ,

We worship all Pilgrimages-2.....(4.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Kamban Vidhvanshanaya Pushpam Nirvapameeti Swaha.

We bring many dishes in Plate.

Offering in feet of all Teerthas.

We worship by holy Naivedya to end hunger disease ,

We worship all Pilgrimages-2.....(5.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Kshudha Rog Vinashanaya Naivedyam Nirvapameeti Swaha.

We bring many Deepaks in Plate.

Doing Aarti of all Teerthas.

We worship by Ghrit Deepak to end darkness of Soul ,

We worship all Pilgrimages-2.....(6.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Mohandhkar Vinashanaya Deepam Nirvapameeti Swaha.

We bring scented Dhoop in our hands.

Burning in fire for Poojan.

We worship by Malayagiri Dhoop to end eight Karmas ,

We worship all Pilgrimages-2.....(7.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Asht Karm Dahanaya Dhoopam Nirvapameeti Swaha.

We bring many sweet fruits in Plate.

Offering in front of all Teerthas.

We worship by beautiful fruits to get Soul Virtues ,

We worship all Pilgrimages-2.....(8.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Moksh Fal Praptaye Falam Nirvapameeti Swaha.

We bring eight fine Dravyas in Plate.

Offering in feet of all Teerthas.

We worship by holy Arghyam to get Anarghya Post ,

We worship all Pilgrimages-2.....(9.)

Om hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Anarghya Pad Praaptaye Arghyam Nirvapameeti Swaha.

-Sher Chhand-

Pilgrimages of Maharashtra are very beautiful .

Pilgrimages of Maharashtra are very peaceful .

We offer the Shantidhara for those Teerthas.

We want to get virtues and to make Soul as Teerth.

Shantaye Shantidhara . (10.)

Flowers are blooming in Garden of Teerthas.

Those are saying pious Story of Teerthas.

We offer those flowers doing Pushpanjali.

And want to get virtues like beautiful flowers.

Divya Pushpanjalih . (11.)

-Japya Mantra-

Ohm Hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyo Namah.

(Recite it 9 ,27 or 108 times)

Jaimala

Tune-Tumhi Ho Mata Pita Tumhi Ho......

Jai holy Teerthas of state Maharashtra .

Give us the blessings, O pious Teerthas! .

We want to make our Soul also Teerath.

We want to go there to pay the homage. (1.)

Pious Lands are called as Teerthas.

Those are divided in many kinds.

Siddhakshetra and Atishayakshetras.

We bow our head for all the Teerthas. (2.)

Every Creature is God in Universe.

This is said According Jain Granthas.

We will try to get that Supreme post.
Then We can make our Soul as God. (3.)

Shri Mangitungi and Gajpanthaji.
Are called Siddhakshetra of Maharashtra .
Kachner-Paithan etc.Teerthas .
Are very famous as Atishayakshetras. (4.)

Maharashtra is big State of Our Nation.
Where is situated tallest Jain Idol.
On the Mountain of Shri Rishabhgiri .
At Siddhakshetra Mangitungiji. (5.)

Shri Lord Rishabhdev is our Proud.
So Maharashtra State is famous in world.
Caves of Ajanta- Elora are there.
Many antique Idols are also there. (6.)

We have brought Jaimalarghya Prabhuvar !
We Offer in your holy feet Jinvar ! .
Say “ Chandnamati “ to all the Teerthas.
Make me Real Teerth O Teerth Jinvar ! . (7.)

Ohm hreem Maharashtra Teerthkshetrebhyah Jaimala Maharghyam Nirvapameeti Swaha.

Shantaye Shantidhara , Divya Pushpanjalih .

-Sorathaa-

We pray to Teerthas , make our Soul true Pilgrimage.
We say to Bhagwan , may we get you the earliest .

Ityashirvadah , Pushpanjalih.

महाराष्ट्र तीर्थ यात्रा (काव्य कथानक)

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-राजी की निकली सवारी.....

महाराष्ट्र की तीर्थ यात्रा, जिनशासन की है कीर्तियात्रा।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी की बनी ऐतिहासिक ये यात्रा।।महा.।।
एक बार सन् उन्निस सौ छ्यानवे में,
पंचकल्याणक हुआ मांगीतुंगी में।
दिव्यशक्ति बन तब माता पधारीं,
चौबीस प्रभु का उत्सव हुआ भारी।।
सहस्रकूट कमलमंदिर जिनालय, कर्मयोगी रवीन्द्र जी ने बनाया।
महाराष्ट्र की तीर्थयात्रा, जिनशासन की है कीर्तियात्रा हो..।।1।।
उसी चातुर्मास में शरदपूर्णिमा को,
मिली अन्तर्प्रेरणा माता को।
एक सौ आठ फिट प्रतिमा बनाओ,
पूर्वमुखी ऋषभदेव प्रगटाओ।।
वह प्रेरणा ही, साकार होकर बन गई जिन संस्कृति की गाथा।
महाराष्ट्र की तीर्थयात्रा, जिनशासन की है कीर्तियात्रा हो..।।2।।
उत्सव महोत्सव का रेकार्ड बन गया,
गिनीज बुक में नाम दर्ज हो गया।
एक वर्ष महामस्तकाभिषेक हुआ,
सबने खूब पंचामृत अभिषेक किया।।
पुनः मातुश्री ने, मंगल विहार कर प्रारंभ की तीर्थयात्रा।
महाराष्ट्र की तीर्थयात्रा, जिनशासन की है कीर्तियात्रा हो..।।3।।

तर्ज-कान खोलकर बात....

ध्यान लगाकर बात मेरी सुन लो भैय्या, मेरी सुन लो बहना,
माता की रोमांचक यात्रा।।टेक.।।
मांगीतुंगी से विहार कर, तीर्थवंदना लक्ष्य बनाकर।
सारे संघ को साथ लेकर, वे तो चल दी भैय्या, मेरी सुन लो बहना,
माता की रोमांचक यात्रा।।1।।

नगर सटाणा मालेगांव में, कवलाना से नांदगांव में।
आचार्यकल्प श्री चंद्रसागर, जन्मभूमि में ये तो पहुँची भैय्या,
मेरी सुन लो बहना, माता की रोमांचक यात्रा।।2।।
फिर सिबूर देवगांव रंगारी, सज्जनपुर की भक्ति न्यारी।
एलोरा में पारसनाथ प्रभु का पंचामृत अभिषेक देखा सुन लो भैय्या
मेरी सुन लो बहना, माता की रोमांचक यात्रा।।3।।
फिर अड़गांव अडूल में जाकर, धर्मतीर्थ के भी दर्शन कर।
कचनेर तीर्थ की ओर माता चल दीं भैय्या, मेरी सुन लो बहना।
माता की रोमांचक यात्रा।।4।।
श्री कचनेर जी अतिशय क्षेत्र में, पार्श्वनाथ जिनवर के पास में।
दर्शन करके खुश हुईं मात, मेरे सुन लो भैय्या, मेरी सुन लो बहना
माता की रोमांचक यात्रा।।5।।
पिम्पलबाड़ी से पैठण जाकर, मुनिव्रत प्रभु के दर्शन पाकर
देखा पंचामृत अभिषेक प्रभु का, सुन लो भैय्या मेरी सुन लो बहना,
माता की रोमांचक यात्रा।।6।।
ढोरकिन बिडकिन में पहुँची, हुई औरंगाबाद में वीर जयंती।
सज गये घर-घर वंदनवार, मेरी सुन लो भैय्या मेरी सुन लो बहना,
माता की रोमांचक यात्रा।।7।।

तर्ज-फुलौरी बिना चटनी कैसे बनी....

आगे सुनो आगे सुनो, आगे सुनो, भाई आगे सुनो।
ज्ञानमती माताजी की यात्रा सुनो, कहाँ कहाँ पहुँची माता आगे सुनो।।टेक.।।

तर्ज-श्री बाहुबली की आरती उतारो मिलके....

माँ ज्ञानमती की यात्रा में आओ मिलके।
आओ मिलके, खुशी मनाओ मिलके।।
माँ ज्ञानमती की यात्रा....।।
औरंगाबाद से चली जटवाड़ा, बालूज में भी बजा नगाड़ा।
बजाजनगर में भक्ति गुलाल उड़ाओ मिलके उड़ाओ मिलके।।
माँ ज्ञानमती की....।।1।।

फिर लासूर स्टेशन आया, दीक्षा जयंती उत्सव मनाया।
ज्ञानमती माँ का बासठवां उत्सव सभी मनाओ मिलके,
सभी मनाओ मिलके।।माँ ज्ञानमती की...।।2।।
बैजापुर से वीर गांव में, वीरसिन्धु गुरु जन्मगांव में।
दीक्षागुरु के जन्मतीर्थ की रज को शीश चढ़ाओ मिलके
शीश चढ़ाओ मिलके।।माँ ज्ञानमती की...।।3।।
श्रीरामपुर शिरडी नगरी, ज्ञानतीर्थ में पार्श्वनाथ जी
कमल जिनालय पर कलशारोहण कर ध्वज चढ़ाओ मिलके
ध्वजा चढ़ाओ मिलके।।माँ ज्ञानमती की...।।4।।
कोपरगांव से नाशिक पहुँचे, ज्ञानवाटिका के दर्शन करके।
गजपंथा जी सिद्धक्षेत्र में कोटि कोटि मुनियों को शीश नमाओ मिलके,
शीश नमाओ मिलके।।माँ ज्ञानमती की...।।5।।

तर्ज-रेल चली भई रेल चली.....

सुनो सुनो भई सुनो सुनो, आगे की यात्रा सुनो सुनो.
कहाँ चलती हैं, क्या कहती हैं, ज्ञानमती माता की बात सुनो।।टेक.।।

तर्ज-मैं तो छोड़ चली बाबुल का देश....

चलीं मुम्बई शहर की ओर, ज्ञानमती माताजी।
मची जयकार जहाँ चहुं ओर, ज्ञानमती माताजी।।टेक.।।
घोटी व शाहपुर के नर और नारी, माता के चरणों में बलि बलिहारी।
पुष्पवृष्टि करें चारों ओर, ज्ञानमती माताजी।।
चलीं मुम्बई.।।1।।
मुम्बई निकट जब कल्याण पहुँची, डोम्बीवली की टोली आ पहुँची।
चलीं मुम्ब्रा बाहुबली की ओर, ज्ञानमती माताजी।।
चलीं मुम्बई.।।2।।
मस्तकाभिषेक बाहुबली का कराया, "बाहुबलिगिरि" का डंका बजाया।
बढ़ीं वाशी ऐरोली की ओर, ज्ञानमती माताजी।।
चलीं मुम्बई.।।3।।

मुम्बई में भाण्डुप से साकीनाका आईं, आगे असल्फा से घाटकोपर आईं।
चलीं पन्तनगर सायन की ओर, ज्ञानमती माताजी।।

चलीं मुम्बई.।।4।।

अन्ट्राप हिल घोड़पदेव जाकर, श्रद्धालु भक्तों की खुशियाँ बढ़ाकर।
पुनः ताड़देव मंदिर की ओर, ज्ञानमती माताजी।।

चलीं मुम्बई.।।5।।

फिर भक्त लाये गुलालवाड़ी में, भक्ति करें माँ की आंगनवाड़ी में।
चौपाटी गईं पार्श्वनाथ, ज्ञानमती माताजी।।

चलीं. मुम्बई.।।6।।

वर्ली-कमाठीपुरा-खार पहुंचीं, अंधेरी से गोरेगांव मंदिर जी।
प्रभु के दर्शन से पुलकित हैं मात, ज्ञानमती माताजी।।

चलीं. मुम्बई.।।7।।

तीनमूर्ति पोदनपुरी तीर्थ पाया, मस्तकाभिषेक तीनों प्रभु का कराया।
''चन्दनामती'' है जय जय का शोर, ज्ञानमती माताजी।।

चलीं मुम्बई.।।8।।